डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस.आर.ए.पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A. PART-II
(M. I. L.)

Date:- 02-02-2022

कहानीकार प्रेमचंद का साहित्य

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी के प्रख्यात कहानीकार व उपन्यासकार हैं। वे उर्दू में नवाबराय के नाम से लिखते थे। उर्दू में लिखा उनका प्रथम कहानी-संग्रह 'सोजे वतन' (1907 ई०) था। अंग्रेजी शासनकाल के दौरान लिखा गया। यह कहानी-संग्रह स्वतंत्रता की भावना से ओत-प्रोत होने के कारण अंग्रेजों द्वारा जब्त कर लिया गया। बाद में वे प्रेमचंद के नाम से साहित्य रचना करने लगे और इसी नाम से प्रसिद्ध हो गए। उन्होंने कुल मिलाकर 300 कहानियों की रचना की है जो 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में संकलित हैं। उनकी कहानी कला को हम तीन अवस्थाओं में देख सकते हैं। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ घटना बहुलता के कारण आकर्षक हैं। दूसरी अवस्था की कहानियाँ कुछ छोटी हैं। इस अवस्था की कहानियाँ मार्मिकता को समेटे हुए हैं। इन कहानियों में शोषण का विरोध और आक्रोश है। महाजनी सभ्यता में शोषण का स्वरूप कितना भयानक है इसका प्रमाण 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में है। कर्ज में लिए गए सवा सेर गेहूँ को एक पीढ़ी तो चुका नहीं पाती तो दूसरी पीढ़ी क्या चुका पाएगी। इसमें संदेह है। 'जुलूस' एवं 'समरयात्रा' में प्रेमचंद जी ने राष्ट्रीय आंदोलन की चर्चा की है।

प्रेमचंद की कहानियों के विकास की तीसरी अवस्था में कथानक छोटा है और व्यंग्य

Scanned by CamScanner

प्रधान कहानियाँ लिखी गई हैं। इस काल की कहानियों में - सद्गति, ईदगाह, नशा, पूस की रात, कफन आदि हैं। ये कहानियाँ यथार्थवादी हैं। शोषण पर कठोर व्यंग्य करती हैं। 'सद्गति' में 'दुखिया' धार्मिक पाखण्ड एवं शोषण का शिकार बनकर मृत्यु को प्राप्त होता है। 'कफन' में घीसू और माधव बेचारा कफन के लिए पैसे से भर पेट भोजन करता है और कहता है कि निश्चय ही बुधिया स्वर्ग जाएगी जो मरते-मरते हमारी आकांक्षा को पूरी कर गई। "वह बैकुण्ठ न जाएगी तो क्या ये मोटे-मोटे जाएँगे जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं।"

1930 ई० से 1936 ई० तक का काल खण्ड प्रेमचंद जी की कहानी का अंतिम चरण है। इस चरण में उन्होंने मनोविश्लेषणवादी और यथार्थ का चित्रण अपने कहानियों में किया है। इस काल की कहानियों में मुंशी जी ने कहानी की मूल संवेदना पर अधिक बल दिया है। 'कफन' एवं 'पूस की रात' में सच्चाई को चित्रित किया गया है। हिन्दी कहानी में मनोविज्ञान को शामिल करने का श्रेय उन्हें ही दिया जाना चाहिए। मुंशी जी का 'नशा', 'मनोवृत्ति', 'ईदगाह' मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित कहानियाँ हैं। 1916 ई० में उनकी प्रथम हिन्दी कहानी 'पंच परमेश्वर' प्रकाशित हुई। प्रेमचंद की कहानियों में जनसाधारण के जीवन की

Page No. ______
Date ______

सामान्य परिस्थितियों, मनोवृत्तियों और समस्याओं का चित्रण मार्मिक रूप से हुआ है। वे साधारण-से-साधरण बात को मार्मिक ढ़ंग से कहने में सिद्धहस्त थे। उनकी सभी कहानियाँ सोद्देश्य हैं। कहानियों में किसी-न-किसी समस्या का अंकन है जो आज भी प्रासंगिक है।

Scanned by CamScanner